(4) उपयोगितावाद के प्रकार Kinds of Utilitarianism

→ उपयोगितावाद / परार्थमूलक सुखवाद अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख को जीवन का लक्ष्य स्वीकार करता है।

* "प्रत्येक सभी के लिए" सिद्धांत को सत्य मानता है।

→ सुख मानवमात्र के लिए उपयोगी बताने के कारण इसे उपयोगितावादी कहा जाता है।

✓ → इस मत के प्रमुख समर्थकों में — बेंथम, मिल

* बेंथम — निकृष्ट परसुखवाद
 * सुख में गुणात्मक भेद नहीं मानते
 * परिमाणात्मक भेद को मानते

* मिल — उत्कृष्ट परसुखवाद
 * सुखों के बीच गुणात्मक भेद मानते

* बेंथम सुख में परिमाणात्मक भेद मानने के कारण इसके (सात) आयामों की बात करते हैं। जो है:

1. तीव्रता
2. व्यापकता
3. उत्पादकता
4. शुद्धता
5. अवधि
6. निकटता
7. असंदिग्धता

} इसी को 'सुखकलन' कहा जाता है।

* बेंथम के अनुसार मानव (चार) कारणों से परसुखवाद में परसुखवादी बनते हैं —
1. प्राकृतिक कारण
2. सामाजिक कारण
3. राजनीतिक कारण एवं
4. धार्मिक कारण

* मिल उत्कृष्ट परार्थवाद के समर्थक होने के कारण अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख के बीच – 'गुणात्मक भेद' को स्वीकारते हैं।

→ इनका मानना है कि व्यक्ति स्वार्थ से परार्थवाद की ओर (बाह्य) कारण के अलावे (एक) और कारण है –

बाह्य आदेश –
- प्राकृतिक
- सामाजिक
- राजनीतिक
- धार्मिक और +

+ 'आंतरिक आदेश' / गौरव गरिमा

* प्रत्येक व्यक्ति में 'गौरव-गरिमा' का भाव है जो स्वार्थ से परार्थ की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है।

→ आदर्शमूलक उपयोगितावाद — रैशडेल, हेस्टिंग्स

आदर्शमूलक उपयोगितावाद के अनुसार वे ही कर्म उचित हैं जो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए ऐसे परम शुभ की उत्पत्ति में सहायक / कारगर हो सकता है जिनमें सुख सम्मिलित है किंतु जो सुख तक ही सीमित नहीं है।

→ नियम सम्बन्धी उपयोगितावाद —

इस सिद्धांत के अनुसार हमें केवल वही कर्म करना चाहिए जो ऐसे सामान्य नियम के अनुरूप हो जिसकी पालना में अधिकतम उपयोगिता हो। समर्थक हैं — ब्रेंड एवं हार्सेनी

→ कर्मसंबंधी उपयोगितावाद –

इस सिद्धांत के अनुसार किसी विशेष परिस्थिति में मनुष्य के लिए संभव सभी कर्मों में से केवल वही कर्म उचित कर्तव्य है जो संसार में अधिक व्यक्तियों के सुख उत्पन्न करवाने में सहायक हो।

(5) मानव अधिकार एवं सामाजिक असमानता

Human right and social disparities

मानवाधिकार

- → ये लोकतंत्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता एवं गरिमा की मांग है।
- → नैतिक दृष्टि से — मानववाद
- → राजनीतिक दृष्टि से — प्रजातांत्रिक व्यवस्था } इसके आधार हैं।
- → ये मानव के सर्वांगीण विकास हेतु ऐसे जो अधिकार मिलना चाहिए वही मानवाधिकार है।
- → भारत का संविधान और भारत में समानता मानवाधिकार का केन्द्र बिन्दु है।
- → मानवाधिकार के लिए
  राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय मानवाधिकार (आयोग)
  अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार (आयोग)
  स्थापित किया गया है।

सामाजिक असमानता

- → सामाजिक असमानता सम्पूर्ण विश्व समाज की विशेषता है जो प्राचीन काल से आज तक विद्यमान है।
- → सामाजिक असमानता के चार स्वरूप देखने को मिलता है —
  दासता
  सामंतवादी व्यवस्था
  जाति व्यवस्था
  वर्ग विभेद
- → सामाजिक असमानता एक सार्वभौमिक तथ्य है। पूर्ण समाजवादी समाज की कल्पना एक [illegible] है।

Ex किसी भी समाज में धर्म, लिंग, वर्ग, जाति, आदि के आधार पर लोगों के बीच भेदभाव को सामाजिक असमानता कहते हैं।

(6) स्त्रीवाद (~~Femin~~(Feminism)

नारीवाद या नारीसमानता या स्त्रीवाद

→ स्त्रीवाद अथवा नारीवाद एक सामाजिक आन्दोलन है जो स्त्रियों को उत्पीड़ित वर्ग मानता है इसका कारण पुरुष समाज है।

→ यह आन्दोलन समाज के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के बराबर अधिकारों को लेकर पुरुषों के विरुद्ध रहा है।

→ यह स्त्री जाति के लिए स्वतंत्रता, समानता, बंधुता, न्याय, लोकतंत्र और विकास का हिमायती है।

→ यह उनके सशक्तीकरण और उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने का विषय है।